पाठ 3. मात्रा बोध

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को मात्राओं का ज्ञान कराना है। बच्चे मात्रा लगे शब्दों को पहचानना तथा मात्रा लगाकर शब्दों को लिखना-बोलना सीख पाएँगे। बच्चों को चित्रों द्वारा भी शब्द पहचानकर मात्रा बोध कराने का प्रयास किया गया है।

अध्यापन संकेत

आ की मात्रा (ा)

बच्चों को बताएँ कि 'अ' स्वर की मात्रा नहीं होती, शेष सभी स्वरों की मात्रा होती है। उन्हें बताएँ, प्रत्येक व्यंजन में स्वर मिला होता है, जैसे – क् + अ = क, ख् + अ = ख आदि। 'आ' की मात्रा का ज्ञान करवाने के लिए उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर शब्द लिखते जाएँ। जैसे – आ से आम, आ से आग आदि। फिर बच्चों को 'आ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बताएँ कि यह वर्ण के बाद खड़ी पाई की तरह लगाई जाती है। 'आ' की मात्रा के पृष्ठ पर दिए चित्रों की पहचान कराकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – अनार, ताला। अब दिए गए 'आ' की मात्रा के शब्दों का उच्चारण उच्च स्वर में अपने साथ-साथ करवाएँ। बच्चों से इन शब्दों की दो-तीन बार दोहराई करवाएँ। 'अ' और 'आ' में अंतर स्पष्ट करने के लिए उच्चारण करवाएँ – अ-आ। शब्दों द्वारा भी अंतर स्पष्ट कीजिए–

तल-ताला, छत-छाता, कल-काला, नल-नाला आदि। 'आ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई छोटी-सी कविता का सस्वर वाचन करें तथा फिर बच्चों से करवाएँ। कविता से संबंधित प्रश्न भी पूछ सकते हैं। उदाहरण के लिए – आम कौन लाया? – लाला। आम कैसा था? – मीठा। आम लेने कौन-कौन आया? – रमा और राघव। आम काटकर क्या किया गया? – थाल सजाया गया। आदि प्रश्नों द्वारा रोचकता बनाई जा सकती है। बच्चों ने पाठ को कितना समझा यह जानने के लिए पाठ में दिए गए अभ्यास करवाएँ। प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दीजिए।

'इ' की मात्रा (ि)

'इ' से इमली से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'इ' की मात्रा (ि) से परिचित करवाएँ। पहले उन्हें 'इ' की मात्रा का सही उच्चारण करना सिखाएँ। 'इ' की मात्रा वाले वर्णों की ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ। उन्हें बताएँ 'इ' की मात्रा (ि) वर्ण के आगे से लगाई जाती है। 'इ' की मात्रा के पृष्ठ पर दिए चित्रों की पहचान कराकर बच्चों से उनका नाम बताने को कहें, जैसे – किताब, चिड़िया। बच्चों के उच्चारण पर ध्यान दें। पाठ में दिए 'इ' की मात्रा (ि) वाले शब्दों की बार-बार दोहराई करवाते हुए कॉपी में लिखवाएँ। 'इ' की मात्रा वाली पंक्तियों की कविता का सस्वर वाचन पहले स्वयं करें फिर अपने साथ-साथ बच्चों से करवाएँ। इससे बच्चे 'इ' की मात्रा वाले शब्दों का उच्चारण भलीभाँति करना सीख पाएँगे। पंक्तियों से संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए – निधि क्या लाई? – गिटार। कौन हिलमिल गया? – हिरण। तिनका कौन उठाकर लाया? – चिड़िया। कौन छिप गया? – सियार आदि।

ई की मात्रा (ी)

'ई' से ईख, शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ई' की मात्रा (ी) से परिचित करवाएँ। उन्हें बताएँ कि यह वर्ण के बाद में या पीछे से लगाई जाती है। बच्चों से पृष्ठ पर दिए चित्रों को

पहचानकर उनका नाम बताने को कहें, जैसे– घड़ी, सीटी। पाठ में दिए 'ई' की मात्रा के शब्दों का उच्चारण करते समय 'ई' की मात्रा पर विशेष बल दें तथा बच्चों से एक-दो बार दोहराई करवाएँ।

इस प्रकार बच्चे 'ई' का उच्चारण करने में अभ्यस्त हो पाएँगे। 'ई' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का लययुक्त वाचन करें, बच्चों से भी मुखर वाचन करवाएँ। पंक्तियों से संबंधित प्रश्न पूछें–नीरज क्या बजा रहा था? – सीटी। बकरी क्या खा गई?–खीरा। दादी क्या-क्या लाई?–ककड़ी और पपीता। ककड़ी कैसी निकली–कड़वी। पपीता कैसा था?–मीठा। बच्चों द्वारा इन प्रश्नों के उत्तर देने से उन्हें 'ई' की मात्रा के शब्दों के उच्चारण का सहज ही अभ्यास हो जाएगा।

उन्हें समझाएँ कि 'इ' की मात्रा (ि) वाले वर्ण का उच्चारण शीघ्रता यानी जल्दी से किया जाता है, जैसे–खिल, दिन आदि। जबकि 'ई' की मात्रा (ी) वाले वर्ण का उच्चारण खींचकर किया जाता है यानी उस वर्ण को देर तक बोला जाता है। बच्चों से दोनों मात्राओं वाले शब्दों का उच्चारण करवाएँ। जैसे–खिल-खील, दिन-दीन, तिन-तीन आदि।

'इ' और 'ई' की मात्रा बच्चों ने कितनी सीखी-समझी, इसकी परख के लिए दिए गए अभ्यास करवाएँ। बच्चों से कहें कि वे शब्दों एवं वर्णों का उच्चारण करते हुए मात्राएँ लगाकर शब्द पूरे करें।

उ की मात्रा (ु)

'उ' से उपवन से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'उ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चों को बताएँ कि 'उ' की मात्रा (ु) वर्ण के नीचे लगाई जाती है तथा केवल 'र' वर्ण में यह मात्रा बीच में लगाई जाती है। 'उ' की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। स्पष्ट करें कि यह मात्रा दाईं ओर से नीचे की ओर मुड़ते हुए बाईं ओर ऊपर जाती है। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। उन्हें बताएँ कि 'उ' की मात्रा का उच्चारण कम समय के लिए यानी जल्दी से किया जाता है। बच्चों से 'उ' की मात्रा के पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे–कछुआ, बुलबुल। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'उ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन करने के लिए प्रेरित करें।

बच्चों से कविता से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें–गुलाब कब खिला?–सुबह। दुकान पर कौन गया?–कुमुद। किसका पानी गिर गया?–सुराही का। गाड़ी कहाँ रुक गई?–पुल पर। इन प्रश्नों द्वारा बच्चों की श्रवण और चित्र को देखकर समझने की क्षमता का विकास होगा।

ऊ की मात्रा (ू)

'ऊ' से ऊन से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ऊ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चों को बताएँ कि 'ऊ' की मात्रा (ू) वर्ण के नीचे लगाई जाती है तथा केवल 'र' वर्ण में यह मात्रा बीच में लगाई जाती है। ऊ की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। स्पष्ट करें कि यह मात्रा दाईं ओर नीचे से ऊपर की ओर घुमाते हुए लिखी जाती है। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। उन्हें बताएँ कि 'ऊ' की मात्रा का उच्चारण खींचकर या देर तक किया जाता है। पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे–सूरज, तरबूज। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'ऊ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन

करने के लिए प्रेरित कीजिए।
बच्चों से पंक्तियों से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें – राजू क्या पहनकर आया? – जूता। चूहा क्या कुतर रहा था? – मूली। शहतूत कौन चख रहा था? – कबूतर। रूपा क्या झूल रही थी? – झूला। इन प्रश्नों द्‌वारा बच्चों की श्रवण और चित्र को देखकर समझने की क्षमता का विकास होगा। बच्चों को 'र' में उ-ऊ की मात्रा लगाना बताएँ। जैसे 'र' में 'उ' की मात्रा ऐसे लगाई जाती है – 'रु'। 'र' में ऊ की मात्रा ऐसे लगाई जाती है – 'रू'। रु-रू का अंतर भी समझाएँ। उ-ऊ की मात्रा का अभ्यास करवाएँ।

ऋ की मात्रा (ृ)

'ऋ' से ऋषि से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ऋ' की मात्रा का प्रयोग करना सिखाएँ। 'ऋ' की मात्रा का सही उच्चारण करते हुए शब्दों को कक्षा में पढ़ें एवं बच्चों को दोहराने के लिए कहें। बच्चों को इसके शुद्‌ध उच्चारण करने का तरीका बताएँ। तृण, वृक्ष जैसे सरल शब्दों से 'ऋ' की मात्रा का उच्चारण शुरू करें। इसके बाद पाठ में दिए सभी शब्दों को उच्चारण के साथ-साथ कॉपी में लिखने को कहें। अभ्यास करने में आवश्यक मदद कीजिए।

ए की मात्रा (े)

'ए' से एड़ी से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ए' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चों को बताएँ कि ए की मात्रा (े) वर्ण के ऊपर लगाई जाती है। 'ए' की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। स्पष्ट करें कि यह मात्रा ऊपर से घुंडी की तरह मोड़ते हुए नीचे की ओर लाई जाती है। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। बच्चों से पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – भेड़, केला। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'ए' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन करने के लिए प्रेरित करें।
बच्चों से पंक्तियों से संबंधित प्रश्न पूछें – शेर किसके नीचे लेटा था? – पेड़ के। शेर ने किसकी आवाज सुनी? – रेलगाड़ी की। शेर को कौन दिखाई दिया? – केवट। केवट क्या लेकर आ रहा था? – लालटेन। बच्चे चित्र को देखकर उत्तर देंगे। इससे बच्चों की श्रवण एवं अवलोकन क्षमता का विकास होगा।

ऐ की मात्रा (ै)

'ऐ' से ऐनक से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ऐ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चों को बताएँ कि 'ऐ' की मात्रा (ै) वर्ण के ऊपर लगाई जाती है। ऐ की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। स्पष्ट करें कि यह 'ए' की मात्रा की तरह ही लगाई जाती है, पर इसमें एक के स्थान पर दो मात्राएँ होती हैं। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। बच्चों से पुस्तक में दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – मैना, थैला। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'ऐ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन करने के लिए प्रेरित करें।
पंक्तियों से संबंधित प्रश्न पूछें – सैनिक कैसे जा रहा था? – पैदल। भैया क्या लेकर आए? – बैलगाड़ी। पैर कौन पटक रहा था? – बैल। बैलगाड़ी से उतरकर सैनिक किसपर चढ़ गया? – नैया पर। इन प्रश्नों द्‌वारा बच्चों की श्रवण और चित्र को देखकर समझने की क्षमता का विकास होगा।

ओ की मात्रा (ो)

'ओ' से ओढ़नी से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'ओ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बच्चों को बताएँ कि 'ओ' की मात्रा (ो) वर्ण के साथ खड़ी पाई के रूप में लगाई जाती है। 'ओ' की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। बच्चों से पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – कोयल, ढोलक। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'ओ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन करने के लिए प्रेरित कीजिए।

बच्चों से प्रश्न पूछें – पेड़ पर कौन बैठा है? – कोयल। कौन नाचने लगा? – मोर। रोटी कौन लाया? – लोमड़ी। कौन भागा? – खरगोश।

औ की मात्रा (ौ)

'औ' से औरत से शुरुआत करते हुए बच्चों को 'औ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। 'औ' की मात्रा की बनावट पर ध्यान दिलाएँ। बताते समय श्यामपट्ट पर मात्रा को बनाते भी जाएँ। बच्चों से पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – कौआ, लौकी। पाठ में दिए शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। 'ओ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी अपने साथ वाचन करने के लिए प्रेरित कीजिए।

बच्चों से पंक्तियों से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें – फौजी किसपर आया? – नौका पर। फौजी ने किसे बुलाया? – चौकीदार को। नौकर क्या लेकर आया? – चौदह पकौड़े। गौरी के मौसा जी क्या लाए? – खिलौने। इन प्रश्नों द्वारा बच्चों की श्रवण और चित्र को देखकर समझने की क्षमता का विकास होगा।

अन्य मात्राएँ

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु की मात्राओं का ज्ञान कराना है।

अनुस्वार (ं)

अनुस्वार नासिक्य ध्वनि है। इसके नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इसमें पहले स्वर आता है और बाद में नासिक्य व्यंजन। बच्चों को बताएँ कि अनुस्वार वर्ण के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में लगाया जाता है। अं से अंगूर से शुरुआत करते हुए बच्चों को इसके उच्चारण तथा मात्रा से परिचित करवाएँ। पृष्ठ पर दिए चित्रों को पहचानकर उनका नाम बताने को कहें। जैसे – बंदर, पतंग। पाठ में दिए अं की मात्रा के शब्दों का उच्चारण करवाएँ।

अं की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें तथा अपने साथ-साथ बच्चों से दोहराई करवाएँ। कविता से संबंधित कुछ प्रश्न पूछें – मंदिर में क्या बज रहा था? – घंटा। पंकज ने क्या घिसा? – चंदन। पुजारी ने क्या बजाया? – शंख। तालाब में कौन तैर रहे थे? – हंस।

चंद्रबिंदु की मात्रा (ँ)

चंद्रबिंदु को अनुनासिक स्वर कहते हैं। इसका उच्चारण हमेशा किसी स्वर के साथ ही होता है। बच्चों को इसके उच्चारण से परिचित करवाने के लिए आँख, साँप, बाँसुरी शब्दों को कक्षा में बार-बार दोहराएँ।

पृष्ठ पर दिए गए शब्दों का वाचन करें तथा बच्चों से भी करवाएँ। बच्चों को प्रत्येक शब्द का उच्चारण बताते समय शुद्धता पर विशेष ध्यान दें। सभी शब्दों को दो-दो बार उच्चारण करते हुए कॉपी में लिखने को कहें। चंद्रबिंदु की मात्रा (ँ) के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियों का सस्वर वाचन करें तथा बच्चों से करवाएँ। कविता से संबंधित प्रश्न पूछें – बाग में क्या उड़ रही थीं? – तितलियाँ। पेड़ पर कौन बैठा था? – चिड़ियाँ। ऊँट क्या हिला रहा था? – पूँछ। कौन हँस रहा था? – लड़कियाँ। बच्चों को अनुस्वार (ं) तथा चंद्रबिंदु की मात्रा (ँ) के अभ्यास करवाएँ।

विसर्ग की मात्रा (:)

बच्चों को विसर्ग (:) की जानकारी दें। दिए गए शब्दों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें तथा बच्चों से पढ़वाएँ।

बच्चों को यह बताएँ कि विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह' के समान होता है। विसर्ग (:) के अभ्यास के लिए दी गई पंक्तियाँ पढ़ें तथा बच्चों से दोहराई करवाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।